महिला समाख्या
महिला शक्ति की ओर

कमला भसीन

अप्रैल की 19, 20 और 21 तारीख को मैं बिहार राज्य की राजधानी पटना में थी। वहां मैं महिला समाख्या बिहार की मेहमान थी। उन्होंने मुझे अपनी कार्यकर्ताओं की ट्रेनिंग के लिए बुलाया था। मैं खुशी-खुशी वहां पहुंच गई क्योंकि मेरे मन में महिला समाख्या प्रोग्राम को जानने, समझने और उससे कुछ सीखने की बहुत इच्छा थी।

पटना पहुंच कर सबसे पहले तो मैंने समाख्या शब्द का सही मतलब पूछा। समाख्या शब्द कब से सुन रही हूं, पर उसका मतलब अभी तक ठीक से नहीं मालूम था। महिला समाख्या बिहार की डायरेक्टर सिस्टर सुजिता ने मुझे मतलब समझाया। **समाख्या दो शब्दों से मिलकर बना है। सम का अर्थ है समान और आख्या का अर्थ है संवाद या बातचीत। समाख्या का अर्थ हुआ समान स्तर या समान सोच के लोगों के बीच बातचीत। इसका एक अर्थ और भी लगाया जा सकता है—समानता के लिये बातचीत या प्रयत्न।**

महिला समाख्या एक योजना का नाम है जो भारत सरकार का शिक्षा विभाग चला रहा है। यह योजना देश के पांच राज्यों में चल रही है—उत्तर प्रदेश, बिहार, गुजरात, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश। इस कार्यक्रम में शुरू से ही सरकार और स्वयंसेवी संस्थाओं की भागीदारी रही है। ख़ासतौर से ट्रेनिंग का सारा काम महिला संस्थाओं को सौंपा गया। हालांकि यह योजना सरकारी है, राज्य स्तर पर इसे चलाने के लिए एक अलग से सोसायटी बनाई गई। इस सोसायटी में कुछ सरकारी लोग हैं और बाकी सब उस राज्य के तजुर्बेकार सामाजिक कार्यकर्त्ता, अच्छी महिला विद्वान आदि हैं। अलग सोसायटी इसलिए बनाई ताकि कार्यक्रम को चलाने में आज़ादी व लोच रहे, ताकि कार्यक्रम सरकारी तंत्र में फंस कर दम न तोड़ दे, और कार्यक्रम को सरकार और स्वयंसेवी संस्थाओं, दोनों का सहयोग मिले।

औरतों की सामूहिक शक्ति

यह कार्यक्रम आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक रूप से पिछड़ी और दलित महिलाओं के लिए है। इसका पूरा ज़ोर औरतों की सामूहिक शक्ति बढ़ाने पर है। औरतों के संगठन या समूह बनाना इसका पहला काम है। इस प्रोग्राम ने कुछ खास आदर्शों या तरीकों को अपनाने पर ज़ोर दिया है। मिसाल के तौर पर:

— गांव की औरतों पर बाहर से कुछ थोपा न जाए। वे स्वयं अपने समूह बनायें, अपने काम का स्वरूप और रफ्तार तय करें।

— कार्यक्रम के कार्यकर्ता व अफ़सर मददगार हों, संचालक न हों। संचालन शुरू से ही औरतें खुद करें।

— गांव स्तर पर योजना बनाना, सब फ़ैसले लेना, योजना का मूल्यांकन करना, सब में औरतों की भागीदारी हो।

— शिक्षा का अर्थ हो सवाल करना, समझना, परिवर्तन के लिए ठोस कदम उठाना, न कि औरों के बनाए और दिए गए ज्ञान को अपना लेना। शिक्षा केवल साक्षरता नहीं है। औरतें अगर साक्षरता से शुरुआत नहीं करना चाहतीं, पहले कुछ और करना चाहती हैं तो ज़रूर करें। औरतों के अपने ज्ञान, हुनर का

मान हो और उन्हें बढ़ावा दिया जाए।

— केवल ऐसे कार्यकर्ताओं को चुना जाए जो गरीब औरतों की इज्ज़त करते हों और उनके साथ उठने-बैठने को तैयार हों।

सखी भी, सहयोगिनी भी

महिला समाख्या में बराबरी का बहुत ध्यान रखा गया है। कार्यकर्ताओं के लिए जो नाम चुने हैं वे भी इस कार्यक्रम की सोच को स्पष्ट करते हैं। हर दस गांवों के लिए है एक सहयोगिनी। सुपरवाईज़र नहीं—सहयोगिनी। सब से पहले सहयोगिनिओं का ही चुनाव और ट्रेनिंग होती है। उसी इलाके की पढ़ी-लिखी, कर्मठ औरतों को चुना जाता है।

इस कार्यक्रम के उद्देश्यों, काम के तरीकों को समझ कर वे गांवों में मज़दूर वर्ग की औरतों से बातचीत शुरू करती हैं। उनके साथ मिल-बैठ कर बात करने, औरतों की स्थिति, गांव की समस्याओं पर चर्चा करने का सिलसिला शुरू करती हैं। उन्हें अपना समूह बनाने का सुझाव देती हैं। उनके समूह को मदद करने का वादा भी करती हैं। जब समूह बन जाता है तो महिलाएं अपने समूह में से ही एक या दो औरतों को चुनती हैं जो समूह के चलाने की ज़िम्मेदारी लेती हैं।

समूह की इन नेताओं या अगुवाओं को नाम दिया है सखी। ग्रुप लीडर नहीं—सखी। नाम सखी होगा तो बर्ताव भी वैसा ही होगा। महिला समाख्या में सखियों और सहयोगिनिओं की खास भूमिका है। इसीलिए इस कार्यक्रम की शुरुआत में सबसे ज्यादा ज़ोर दिया जाता है सखियों और सहयोगिनिओं की ट्रेनिंग और तैयारी पर। ये दोनों ठीक से तैयार होती हैं, चेतन और कर्मठ होती हैं तो काम चल पड़ता है।

तेज़ रफ्तार

पटना में बिताए तीन दिनों में मैंने महिला समाख्या बिहार को कुछ और नज़दीक से देखा और समझा। ब्यालीस औरतें जो ट्रेनिंग में आईं थीं, उन सब से कुछ सुना और सीखा। रात को ट्रेनिंग के बाद उनकी रिपोर्टें व किताबें भी पढ़ीं। चार-पांच अच्छी किताबें हैं इस प्रोग्राम के बारे में, एक दो अंग्रेजी में हैं, बाकी हिन्दी में। दो छोटी-छोटी पत्रिकायें भी निकालते हैं ये। हर ज़िले में भी एक छोटी-सी पत्रिका छापी जाती है। धीरे-धीरे काफ़ी लिखित सामग्री तैयार हो गई है। अगर आप में से कोई इस कार्यक्रम के बारे में अधिक जानकारी चाहते हैं तो पत्र लिख कर मंगवा सकते हैं।

महिला समाख्या बिहार, बिहार शिक्षा परियोजना का हिस्सा है। बिहार शिक्षा परियोजना का उद्देश्य है निरक्षरता को कम करना, हर बच्चे को प्राथमिक शिक्षा देना, महिलाओं की शिक्षा पर पूरा ध्यान देना और शिक्षा को समाज से जोड़ना और उसे समाज बदलने का साधन बनाना।

सिस्टर सुजिता का मानना है कि बिहार शिक्षा परियोजना के साथ जुड़े होने के कारण महिला समाख्या, बिहार और तेज़ी से बढ़ पाया है। आपके मन में भी शायद यह प्रश्न उठ रहा हो कि ये 'सिस्टर' (नन) इस प्रकार के प्रोग्राम की डायरेक्टर कैसे? बिहार के इस प्रोग्राम में एक 'सिस्टर' ही नहीं, तीन-तीन सिस्टर से मिली मैं।

यही खासियत है इस कार्यक्रम की। जहां भी

अच्छे कर्मठ, तजुर्बेकार, ईमानदार लोग मिलें उन्हें साथ मिला लो। और आप पाओगे कि एक अच्छे प्रोग्राम से सभी जुड़ना चाहेंगे। सिस्टर सुजिता "सिस्टर्ज आफ नौत्रे डाम" समूह की हैं। वह केरल राज्य की हैं, पर बरसों से बिहार में काम कर रही हैं। कई बरस गांवों में रहीं। मज़दूर वर्ग और शोषित जातियों के साथ शिक्षा, संगठन, महिला शक्ति के इनके काम का अनुभव देख कर उन्हें महिला समाख्या का कार्य भार सौंपा गया।

कर्मठ कार्यकर्ताओं की जमात

जिन 42 कार्यकर्ताओं के साथ मैंने तीन दिन की कार्यशाला की वे भी कम नहीं थीं। उन में भी चमक थी, काम करने की लगन थी हालांकि वे भी उसी समाज से हैं जहां लड़कियों और औरतों पर अनगिनत बंधन होते हैं। ये सब बीस वर्ष से चालीस वर्ष के बीच की थीं। अधिकतर तीस वर्ष से कम थीं। कुछ को छोड़ कर सभी कॉलेज पूरा कर चुकी थीं। मुझे लगा कि मैं एक सुन्दर बगीचे में हूं, जहां अलग-अलग तरह के सुन्दर पेड़ हैं।

ये सारी महिलाएं ज़िला स्तर पर प्रशिक्षक या 'कोर टीम' की सदस्य हैं। यानि ये वो समूह है जो सहयोगिनिओं और सखिओं की मदद करता है, जिले में नए केन्द्र और कार्यक्रम शुरू करता है। कार्यक्रम की प्रकिया और विकास का लेखा-जोखा रखता है।

इनके साथ तीन दिन बैठ कर बहुत मज़ा आया। सुबह साढ़े आठ से देर रात तक बातचीत चलती थी। मुझे काफी बोलना पड़ता था पर थकान महसूस नहीं होती थी। सवाल पूछने वाले अच्छे हों तो जवाब देने वालों को भी मज़ा आता है। उनके साथ मैं भी मगन रही तीन दिन। जम कर और खुल कर हर विषय पर बातचीत हुई। वहां पर मुझे अपना प्रिय शेर याद आया—

जो इल्म की इबारत चेले की आंख में थी
बस हम उसी को पढ़ कर उस्ताद हो गये हैं

कुछ आंकड़ों पर एक नज़र

बिहार, जो अपने विश्वविद्यालयों के लिए मशहूर था आज शिक्षा में बहुत पिछड़ा हुआ है। यहां पुरुष साक्षरता दर 52 फीसदी है और महिला साक्षरता 23 फीसदी है। यानि दस में से सात औरतें आज भी पढ़ लिख नहीं सकतीं। कुछ गांवों में तो एक भी पढ़ी-लिखी औरत नहीं मिलती।

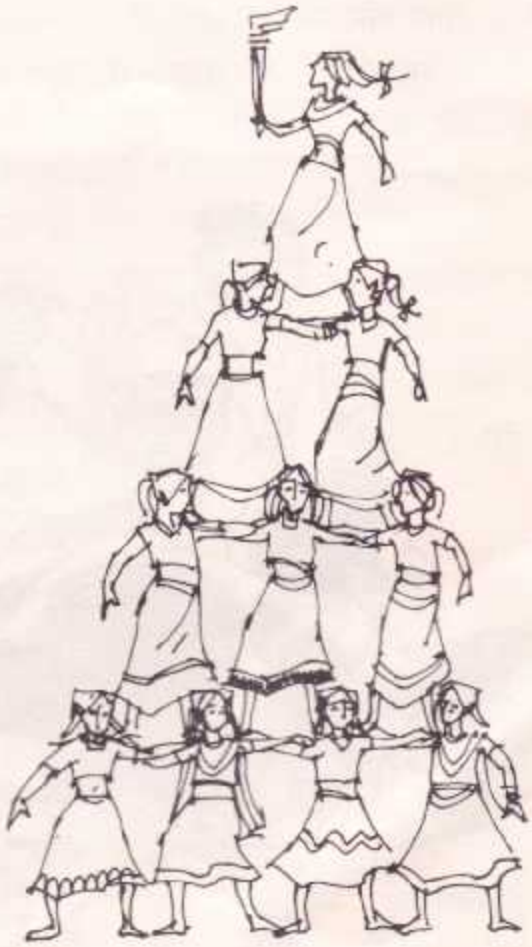

महिलाओं की अपनी पहचान व शक्ति

महिला समाख्या कार्यक्रम का मक़सद या उद्देश्य है शिक्षा के ज़रिए औरतों की ताक़त बढ़ाना और बनाना, उनके पिछड़ेपन को मिटाना। बरसों से औरतों को नीचे रखने का जो सिलसिला चला है उसे ख़त्म करने की कोशिश करना। इसके अन्य उद्देश्य हैं—

— औरतों के मन में उनके अपने लिए इज्ज़त बढ़ाना और उनका हौसला बढ़ाना।
— उन्हें अपने खुद के काम और योगदान की क़ीमत और अहमियत को समझने का मौक़ा देना।
— चेतन और सक्षम औरतों की एक जमात बनाना जो महिला विकास की अगवानी कर सकें।

बिहार की जो बात ज़्यादा भयानक है वह है औरतों की लगातार गिरती संख्या। आज से नब्बे साल पहले वहां 1000 पुरुषों पर 1060 औरतें थीं पर आज 1000 पुरुषों पर केवल 911 औरतें हैं। इन आंकड़ों से महिलाओं की गिरती हुई स्थिति साफ़ नज़र आ रही है।

ऐसे माहौल में महिला समाख्या स्त्रियों को शिक्षित और सशक्त बनाने का प्रयत्न कर रही है। औरतों की स्थिति पर जगह-जगह बहस शुरू कर रही है। हर जगह यह संदेश पहुंचा रही है कि वह समाज आगे नहीं बढ़ सकता जहां औरतों को नकारा और दबाया जाता है।

महिला समाख्या बिहार 1992 में शुरू हुआ। यह बिहार के छः ज़िलों में काम कर रहा है। तीन साल में ही यह कार्यक्रम लगभग 1500 गांवों में पहुंच गया है। जनवरी 1995 में 1002 महिला

समूह बन चुके थे जिनमें 24,079 सदस्य थीं।

जगजगी केंद्र

इन महिला समूहों के साथ-साथ अनौपचारिक शिक्षा केंद्र भी खोले गए हैं जिन्हें ये *जगजगी* केंद्र कहते हैं। जगजगी एक मज़ेदार नाम है। अर्थ कई हैं इसके। जग के प्रति जगी बालिका या महिला या जग को जगाने वाली। जनवरी 1995 में 273 जगजगी केंद्र चल रहे थे। जिनमें करीब साढ़े सात हज़ार लड़कियां, महिलायें व कुछ लड़के पढ़ रहे थे।

औरतों व लड़कियों में नेतृत्व का विकास करने व उन्हें शिक्षा देने के लिए महिला समाख्या ने छः महिला शिक्षण केंद्र भी शुरू किए हैं जहां तीन से बारह महीने का प्रशिक्षण दिया जाता है। छात्राएं वहीं छात्रावास में रहती हैं, पढ़ती हैं, खेलती-कूदती हैं, हंसती गाती हैं। यहां उन्हें पांचवी से दसवीं कक्षा तक की परीक्षा देने के लिए तैयार किया जाता है।

जब औरतें इतने काम करेंगी तो उन्हें अपना 'घर' तो चाहिए ही। ऐसी जगह चाहिए जहां वो बैठ सकें, पढ़ सकें, अपनी बैठकें कर सकें, हंस-गा सकें। इसीलिए इस कार्यक्रम में *महिला कुटीर* बनाई जा रही हैं। कुछ महिला कुटीर औरतों ने अपनी मेहनत से बना भी ली हैं। सत्तर गांवों में इन कुटीरों के लिए ज़मीन ले ली गई है।

संगठन में शक्ति

अपने संगठन की शक्ति के बल पर महिला समूह गांव के लिए तरह-तरह के काम कर रही हैं। कहीं पर राशन की दुकान की गड़बड़ रुकवाई है तो कहीं चीनी की तस्करी। कहीं पर बलात्कार करने वाले पुरुषों को पकड़ा है तो कहीं औरतों की मारपीट रुकवाई है। कुछ समूहों ने जवाहर रोज़गार योजना में गांव के कामों के ठेके लिए हैं। एक ठेका लिया बांध बनाने का। पौने तीन लाख का ठेका जो किसी ठेकेदार को जाता, जो आधा पैसा खाता और बेकार बांध बनाता। औरतों ने काम भी पक्का किया, पूरी मज़दूरी भी दी गांव की औरतों को और एक नए तरीके की शुरुआत की। अब और समूह भी छोटे बांधों, सड़कों, बस प्रतीक्षालयों के ठेके ले रही हैं।

महिला समाख्या, बिहार का काम देख कर मैं निहाल हुई। अब और राज्यों में जाकर महिला समाख्या के काम को देखने की इच्छा जगी है। अगर गई तो लौट कर आप को ज़रूर रपट दूंगी। □